International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 873-874

मृद्भांड : भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण स्त्रोत

अशोक कुमार
Lect. in History M.A., NET History, G.SSS Gudhan, Rohtak, Haryana, India

सारांश
प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी अधिकत्तर पुरातात्विक स्त्रोतों पर निर्भर हैं और पुरातात्विक स्त्रोतों में मृद्भांड का स्थान महत्वपूर्ण हैं। प्रागैतिहासिक और आद्य ऐतिहासिक काल में तो मृद्भांड एतिहास की जानकारी के लिए मील के पत्थर के रूप में कार्य करते हैं। नव पाषाण काल, ताम्रपाषाण तथा हड़प्पा और वैदिक सभ्यता की अनेक जानकारियों पर प्रकाश केवल वहां के उत्खनन से प्राप्त मृद्भांडों के कारण ही पड़ पाया[2]। मृद्भांडों से वर्तमान समय की कला, संस्कृति, आर्थिक प्रगति तथासामाजिक परम्पराओं की जानकारी होती हैं। मृद्भांड काल निर्धारण में भी अहम भूमिका निभाते हैं। इसलिए पुरातत्वविद् किसी भी सभ्यता के अध्ययन के समय मृद्भांडों पर विशेष ध्यान देते हैं।

मुख्य शब्द : मृद्भांड, प्रागैतिहासिक, आद्य ऐतिहासिक काल, नव पाषाण काल, ताम्र पाषाण काल, हड़प्पा सभ्यता, वैदिक सभ्यता, पुरातत्वविद्।

प्रस्तावना
विभिन्न स्थानों के उत्खनन से प्राप्त मृद्भांड काल विशेष पर प्रकाश डालते हैं। हड़प्पा, मोहन जोदड़ों, रोपड़, कालीबंगा आदि स्थानों से प्राप्त मृदभांड प्रागैतिहासिक युग के समाज, धर्म और कला को उजागर करते हैं[3]। कौशाम्बी, हस्तिनापुर, अद्वित्छेत्र, राजगृह, नालंदा आदि स्थानों के उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्ड विभिन्न एतिहासिक युगों के जन – जीवन पर प्रकाश डालते हैं। मृद्भाण्डों के प्रकार, बनावट, आधार, रंग–रूप मिट्टी तथा उस पर बनी चित्रकारी संबंधित काल की महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं। मृद्भाण्डों के प्रयोग से आर्थिक विषमता का भी सटीक अनुमान लगाया जा सकता हैं।

शोध–प्रविधिः
प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण विधि पर आधारित हैं। इसके लिए शोध सामग्री को अन्य पुस्तकों से संकंलित किया गया हैं। चूंकि शोध कार्य द्वितियक आकड़ों पर आधारित हैं, इसलिए शोधकर्ता द्वारा आनुभाविक दृष्टिकोण अपनाकर शोध कार्य को गति देने का प्रयास किया हैं।

शोाध के उददेश्यः
यह शोध–पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर लिखा गया हैं :–
प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्व को समझना।
पुरातात्विक सामग्री में मृद्भाण्डों के महत्व को उजागर करना।
विभिन्न संस्कृतियों की कलात्मक विशेषताओं से परिचित कराना।
भारत के विभिन्न भागों में उत्खनन से प्राप्त मृदृभाण्डों को पुरातत्वविदों ने पांच वर्गों
में विभाजित किया हैं।

1. **काले और लाल मृद्भांड :–** इन मृद्भांडों के अन्दर तथा बाहर का ऊपरी भाग काले रंग का होता हैं और बाहर का निचला भाग लाल रंग का होता है[1]। ऐसे मृद्भांड प्राय मध्य भारत के माहेश्वर, नागदा, नवदाटोली, गुजरात के लोथल और रंगपुर तथा बिहार के सोनपुर क्षेत्र से प्राप्त हए हैं। ऋग्वेदिक काल से पहले की जातियां इस प्रकार के मृद्भाण्डों को प्रयोग में लाती थी। ये सभी लौह–युग से संबंधित माने जाते हैं। तथा इनका समय लगभग 2000 ई0 पू0 को निर्धारित किया हैं।
2. **गेरूए रंग के मृद्भांड :–** ये मृद्भांड गेरूए रंग तथा लाल रंग के होते हैं गंगा क्षेत्र में ये प्रचुरता से पाए जाते हैं। हरिद्वार, बिजनौर, बदायूँ आदि स्थानों से उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। इनका समय लगभग 1200 ई0 पू0 निर्धारित किया गया हैं।
3. **चित्रित धूसर मृद्भांड :–** ये मृद्भांड कास्य युग से संबंधित हैं। ये मृद्भांड चाक पर निर्मित होते थे तथा आवे पर पकाए जाते थे। राजस्थान, पंजाब तथा उत्तरप्रदेश के अनेक स्थानों से प्यालियां और तश्तरियां प्राप्त हुई हैं। काली पालिश वाले मृद्भांडों के नीचे भी इस प्रकार के मृद्भांड प्राप्त हुए है। प्रारम्भिक आर्य इस प्रकार के मृद्भांड प्रयोग में लाते थे तथा इनका समय लगभग 600 ई0 पू0 निश्चित किया गया हैं।
4. **उत्तरी काली पॉलिश वाले मृद्भांड :–** ये मृद्भांड लौह युग के परिचायक है[5]। पुरातत्वविदों ने इन मृद्भाण्डों का काल 600 ई0 पू0 से 200 ई0 पू0 के मध्य निर्धारित किया हैं, ये मृद्भाण्ड उत्तर में पेशावर तथा तक्षशिला से, दक्षिण में अमरावती से, पूर्व में बानगढ़ तथा शिशुपाल गढ से पश्चिम में नासिक तथा विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
5. **दांतेदार पहिए से चित्रित मृद्भांड :–** इन मृद्भांडों का समय इतिहासकारों ने 200 ई0 तक का स्वीकार किया हैं। ये दक्षिणी भारत के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं। बंगाल में भी ऐसे मृद्भांड पाए गए हैं।

निर्माण
पुरातात्विक जानकारी के अनुसार लगभग 5000 वर्ष पू0 सिंधु प्रदेश में चाको पर उत्तम किस्म के मृदृभांड बनाए जाते थे। प्रागैतिहासिक पुरातत्व से जानकारी प्राप्त होती हैं कि दक्षिणी भारत में अनगढ़ मृद्भांड़ों का निर्माण चाक के बिना ही होता था। सम्भवतः स्त्रियां चाक चलाती थी और पुरूष द्वारा लकड़ी से ठोककर निश्चित आकार बनाया जाता था। प्राप्त साक्ष्यों से अनुमान लगाया जाता हैं कि मृद्भांडों के निर्माण कार्य में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही होगी और कुम्हार के द्रुतगति चाक का प्रयोग सदैव पुरूष ही करते रहे होंगे। चाक पर बड़ी संख्या में सुन्दर बर्तन बनाना सिन्धु घाटी की सभ्यता की विशेष उपलब्धि थी। डी0 डी0 कौशाम्बी ने व्यक्त किया हैं कि आर्यों के कोई विशिष्ट मृद्भांड नहीं थे। यद्यपि उत्तरी चित्रित 'धूसर मृद्भांड' शीघ्र ही यह स्थान ग्रहण कर लेते हैं।

लगभग 1000 ई0 पू0 की ताम्रनिधियां जो गंगा के मैदान से मिली हैं। उसको देखकर यह माना जाता हैं कि ताम्र वस्तुएं पहले मृद्भांडों के आवे से ही तैयार की गई थी। परन्तु इन ताम्रनिधियां के साथ जितने भी मृद्भांड मिले हैं वे सारे अनगढ़ अधपके तथा गेरू से पोते हुए हैं और खोदते वक्त वो क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। हस्तिनापुर के प्रथम स्तर में अधपके, घटिया दर्जे के गेरू – पुते जो मृद्भांड प्राप्त हुए हैं, वे सम्भवतः परवर्ती नाग लोगों के हो सकते हैं।

भारतीय पुरातत्ववेत्ता ईसा पूर्व की पांचवी और चौथी सदियों को उत्तरी ओपदार काले मृद्भांड की प्रचुरता के युग के रूप में पहचानते हैं। ये उन्नत किस्म के मृद्भांड थे और 6ठी शताब्दी ई0 पू0 में इनका प्रयोग द्वारा सम्भवतः तेल व मदिरा रखने के पात्रों के रूप में किया जाता था। ईसा की प्रथम सदीं पूर्व इनका प्रचलन बंद हो गया था।

काल निर्धारण

भारत में नव पाषाण (युगीन) सभ्यता के 6000 ई0 पू0 से मिले अवशेषों में गेहूँ और जौ का उत्पादन, कच्ची ईंटों के आयताकार मकान, बड़े पैमाने पर पशुपालन आदि प्रमुख हैं। इस क्षेत्र में मृद्भांडों के अवशेष 5000 ई0 पू0 के आस–पास मिलते हैं जो भारत में उपलब्ध अवशेषों में प्राचीनतम हैं। इन समस्त विशेषताओं से युक्त इस क्षेत्र का प्राचीनतम और विस्तृत क्षेत्र 'मेहरगढ़' था। जहां की कृषक बस्ती 7000 ई0 पू0 की स्वीकार की जाती हैं। पुरातत्वविदों का मत हैं कि हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने मृद्भांड के निर्माण की कला भी इसी क्षेत्र से ली होगी।

उत्तर –पश्चिमी क्षेत्र में ही कश्मीर घाटी में ''बुर्जाहोम'' और ''गुफकराल'' नव पाषाण युग के अन्य महत्वपूर्ण केन्द्र थे यद्यपि इनका विकास 2500 ई0 पू0 के लगभग हुआ था तथा यहाँ भी अनेक प्रकार के मृद्भांड प्राप्त हुए हैं।

नव–पाषाण युग के पूर्वोत्तर भारत विशेषकर असम व मेघालय की पहाड़ियों से प्राप्त मृद्भांड विशिष्ट हैं जिन पर रस्सी से कलाकृतियां बनाई गई हैं और मोती चिपकाएं गए हैं इनका समय लगभग 5000 ई0 पू0 निर्धारित किया गया हैं।

पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यभारत में फैली ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों में लाल स्तर पर काले रंग से चित्रित मृद्भांडों का प्रयोग होता था। इन ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों में कायथ संस्कृति सबसे पुरानी हैं जो लगभग 2000 ई0 पू0 चम्बल नदी के क्षेत्र में फैली हुई थी। ताम्रपाषाणिक संस्कृति के अन्य प्रमुख केन्द्र थे– उदयपुर के समीप बनारस संस्कृति, राजस्थान की धग्घर घाटी में सोथी संस्कृति, नवदाटोली में मालवा संस्कृति, बिहार में चिरांद तथा दाइमाबाद और इनामगांव में जोखे।

सिन्धु सभ्यता के मृद्भांड चमकीले, गहरे लाल रंग के तथा मजबूत व अच्छी तरह से पके हुए हैं। ये चित्रित तथा सादे दोनों प्रकार के हैं। सादे मृद्भांड अधिकत्तर लाल रंग के मिले हैं जबकि चित्रित मृद्भांड काले व लाल दोनों रंगों के हैं। मृद्भांडों को सजाने के लिए विभिन्न तरीकों का प्रयोग किया जाता था। इन पर त्रिभुज, वृत, वर्ग तथा ज्यामितीय आकृतियों को उकेरा जाता था। वृक्ष, पौधे, पीपल के पत्तों के अतिरिक्त विभिन्न जीव–जन्तुओं के चित्र इन मृद्भांडों पर बनाए जाते थे। इनका आकार गोल, घुन्डीदार, छिद्रयुक्त, घुमावदार होता था। चमकीले हड़प्पा मृद्भांड प्राचीन विश्व में अपनी तरह के प्राचीनतम उदाहरण हैं। मृद्भांड में प्याले, थालियां, कलश, मर्तबान, गिलास, कटोरियां, अनाज मापक इत्यादि सभी होते थे। सिन्धु सभ्यता में पाए गए मृद्भांडों के निर्माण में समरूपता विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। और इनका समय काल 2600 ई0 पू0 से 1800 ई0 पू0 के लगभग माना गया हैं।

उत्तरवैदिक काल पुरातात्विक दृष्टि से चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति का काल हैं (1000 ई0 पू0 से 600 ई0 पू0)। इस काल में अनेक प्रकार के मृद्भांड मिले हैं –लाल मृद्भांड, काला –लाल मृद्भांड, ओपदार काले मृद्भांड तथा लाल मृदभांड सबसे ज्यादा मिले है[4] क्योंकि यह सामान्य लोगों द्वारा प्रयोग में लाए गए होंगे और चित्रित धूसर मृद्भांडों की संख्या कम हैं जो सम्भवतः विशिष्ट लोगों द्वारा प्रयोग में लाए जाते थे।

मौर्यकाल में काले ओपदार मृद्भांड प्रचलित थे[6]। पुरातत्वविदों ने इनका समय 323 ई0 पू0 से 184 ई0 पू0 माना हैं। ये उत्तरी ओपदार कृष्ण मृद्भांड इतिहास की महत्वपूर्ण निधि हैं। मौर्योत्तरकाल (184 ई0पू0 से 320 ई0) में लाल पॉलिश वाले मृदभांड और टोटी लगे मृद्भांड का प्रचलन था जो सम्भवतः मध्य एशिया की कला से प्रभावित थे[7]।

निष्कर्ष (महत्वः)

पुरातात्विक सामग्री में मृद्भांड अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। मृद्भांडों के आधार पर किसी स्थान की प्राचीनता का पता लग सकता हैं। मृद्भांडों का प्रयोग प्रत्येक युग में होता रहा हैं। मृद्भांडों के निर्माण में लोग अपनी कला व कौशल का परिचय देते थे। मृद्भांडों के आधार पर पुरातत्वविद मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक जीवन की जानकारी देते हैं। सांस्कृतिक अनुक्रम में पूर्णतया सहायक सिद्ध होने से दो संस्कृतियों तथा दो देशों के व्यापारिक संबंधों पर प्रकाश डालते हैं। मृद्भांडों के आधार पर पुरातत्वविदों ने काल तथा युग निर्धारित किए हैं। ब्रह्मगिरी से प्राप्त मृद्भांडों के आधार पर ही सर मार्टीमर ह्वीलर ने पाषाण, महाश्म और आदिकालीम सांस्कृतिक युगों का निर्धारण किया था।

भारतीय इतिहास में मृद्भांडों के आधार पर तीन प्रमुख युगों का निर्धारण किया जा सकता हैं यह क्रमशः चित्रित धूसर, उत्तरी कृष्ण मार्जित और रूलेट युक्त मृद्भांड हैं चित्रित धूसर मृद्भाण्ड का सम्बन्ध कास्य युग से तथा उत्तरी कृष्ण मार्जित मृद्भांडों का सम्बन्ध लौह युग से हैं। रूलेट युक्त मृद्भांड सबसे पहले अरिकमेडु के उत्खनन में 1945 ई0 में प्राप्त हुए थे।

इस प्रकार भारतीय पुरातत्व अनुसंधान और तिथी निर्धारण में मृद्भांडों का महत्वपूर्ण योगदान हैं। हड़प्पा सभ्यता के विस्तृत क्षेत्र का वृतान्त मृद्भांडों से ही पहले मिला था[8]। ये वास्तव में प्राचीन इतिहास के महत्वपूर्ण प्राथमिक स्त्रोत हैं।

संदर्भ सूचि

1. An Encyclopaedia of Indian Archaeology , Amalananda Ghosh, 135.
2. WWW. Vivacepanorama.com/chalcolithie age
3. Harappan Civilization: Homogeneity and Heterogeneity, Vijnesh Mohan, 36.
4. Pottery- Making Cultures and Ludian Civilization: Baidyanath Saraswati, 102.
5. Archaeology and Religion in Early Northwest India: History …….. , Daniel Michon, 2015, 69.
6. Material Culture & Social Fomations in Aucient India, R.S. Sharma, 261.
7. The Character of the Maurya empire Brathindra Nath Mukherjee, 88.
8. Research Methodology in History; Tej Ram Sharma, 81.